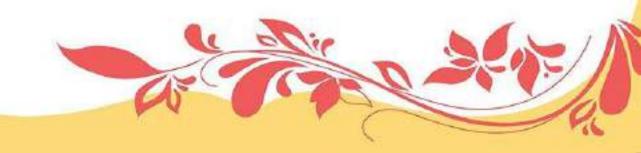


सलोकु ॥ निरगुनीआर इआनिआ सो प्रभु सदा समालि ॥ जिनि कीआ तिसु चीति रखु नानक निबही नालि ॥४॥



## असटपदी ॥ रमईआ के गुन चेति परानी ॥ कवन मूल ते कवन द्रिसटानी ॥ जिनि तूं साजि सवारि सीगारिआ॥ गरभ अगनि महि जिनहि उबारिआ ॥ बार बिवसथा तुझिह पिआरै दूध ॥ भरि जोबन भोजन सुख सूध ॥ बिरधि भइआ ऊपरि साक सैन ॥ मुखि अपिआउ बैठ कउ दैन॥ इह निरगुनु गुनु कछ न बूझै ॥ बखिस लेहु तउ नानक सीझै ॥१॥



जिह प्रसादि धर ऊपरि सुखि बसहि॥ सुत भ्रात मीत बनिता संगि हसहि॥ जिह प्रसादि पीवहि सीतल जला ॥ सुखदाई पवनु पावकु अमुला ॥ जिह प्रसादि भोगहि सभि रसा ॥ सगल समग्री संगि साथि बसा ॥ दीने हसत पाव करन नेत्र रसना ॥ तिसहि तिआगि अवर संगि रचना ॥ ऐसे दोख मूड़ अंध बिआपे॥ नानक काढि लेहु प्रभ आपे ॥२॥



आदि अंति जो राखनहारु ॥ तिस सिउ प्रीति न करै गवारु ॥ जा की सेवा नव निधि पावै ॥ ता सिउ मूड़ा मनु नही लावै॥ जो ठाकुरु सद सदा हजूरे॥ ता कउ अंधा जानत दूरे॥ जा की टहल पावै दरगह मानु ॥ तिसहि बिसारै मुगधु अजानु ॥ सदा सदा इहु भूलनहारु ॥ नानक राखनहारु अपारु ॥३॥



रतन् तिआगि कउडी संगि रचै॥ साचु छोडि झूठ संगि मचै॥ जो छडना सु असथिरु करि मानै ॥ जो होवनु सो दूरि परानै ॥ छोडि जाइ तिस का स्रमु करै॥ संगि सहाई तिसु परहरै॥ चंदन लेपु उतारै धोइ॥ गरधब प्रीति भसम संगि होइ ॥ अंध कूप महि पतित बिकराल ॥ नानक काढि लेहु प्रभ दइआल ॥४॥



करतूति पसू की मानस जाति॥ लोक पचारा करै दिनु राति ॥ बाहरि भेख अंतरि मलु माइआ॥ छपसि नाहि कछु करै छपाइआ॥ बाहरि गिआन धिआन इसनान ॥ अंतरि बिआपै लोभु सुआनु ॥ अंतरि अगनि बाहरि तनु सुआह ॥ गलि पाथर कैसे तरै अथाह ॥ जा कै अंतरि बसै प्रभु आपि ॥ नानक ते जन सहजि समाति ॥५॥



सुनि अंधा कैसे मारगु पावै॥ करु गहि लेहु ओड़ि निबहावै॥ कहा बुझारति बुझै डोरा ॥ निसि कहीऐ तउ समझै भोरा॥ कहा बिसनपद गावै गुंग ॥ जतन करै तउ भी सुर भंग ॥ कह पिंगुल परबत पर भवन॥ नहीं होत ऊहा उसु गवन ॥ करतार करुणा मै दीनु बेनती करै॥ नानक तुमरी किरपा तरै ॥६॥



संगि सहाई सु आवै न चीति ॥ जो बैराई ता सिउ प्रीति ॥ बल्आ के ग्रिह भीतरि बसै॥ अनद केल माइआ रंगि रसै॥ द्रिड् करि मानै मनहि प्रतीति ॥ कालु न आवै मूड़े चीति ॥ बैर बिरोध काम क्रोध मोह ॥ झूठ बिकार महा लोभ ध्रोह ॥ इआहू जुगति बिहाने कई जनम ॥ नानक राखि लेहु आपन करि करम ॥७॥



तू ठाकुरु तुम पहि अरदासि॥ जीउ पिंडु सभु तेरी रासि॥ तुम मात पिता हम बारिक तेरे ॥ तुमरी क्रिपा महि सुख घनेरे ॥ कोइ न जानै तुमरा अंतु ॥ रक्रचे ते रक्रचा भगवंत ॥ सगल समग्री तुमरै सूत्रि धारी ॥ तुम ते होइ सु आगिआकारी ॥ तुमरी गति मिति तुम ही जानी ॥ नानक दास सदा कुरबानी ॥८॥४॥

